एक ऑंकार सतिगुरु प्रसादि
आत्मा दे नाल !
गुरबाणी
कीर्तन
हक
कृपया अमल कर व्यवहारिक बने
ताकी स्मर्थ हो कर आगे बढ़ सके ।।
हक
हक
मेरे
साहिब जी
शुद्ध रूहानी सतसंग
कहा भूलिओ रे झूठे लोभ लाग । कछ बिगरिओ नाहिन अजहु जाग ।
स्मम सुपने कै इह जग जान । बिनसै छिन मै साची मान । संग तैरै हरि बसत नीत ।
निस बासुर भज ताह मीत । बार अंत की होइ सहाइ । कह नानक गुन ता के गाइ ।
Www.9009.co.in

"हे प्राणी जाग"

स्वयं की समीक्षा कर.....!?

1. कहा भूलिओ रे झूठे लोभ लाग । कछ बिगरिओ नाहिन अजहु जाग ।

अर्थः- हे भाई ! नश्वर दुनिया के लोभ में ग्रस्त होकर कहाँ भूला-भटका फिरता है ? अब भी बुद्धिमान बन, (अब भी) कुछ बिगड़ा नहीं है ।

सम सुपनै कै इह जग जान । बिनसै छिन मै साची मान ।

अर्थः- हे भाई ! इस जगत को स्वप्नवत् समझ । यह बात सत्य मान कि यह जगत एक क्षण में नष्ट हो जाता है ।

संग तेरै हरि बसत नीत । निस बासुर भज ताह मीत ।

अर्थः- हे मित्र ! परमात्मा हमेशा तेरे साथ अवस्थित है । तू दिन-रात्रि उसका ही भजन किया कर ।

बार अंत की होइ सहाइ । कह नानक गुन ता के गाइ । (1187)

अर्थः- गुरु नानक का कथन है कि अन्तिम समय में प्रभु ही सहायक बनता है । तू उस प्रभु का गुणगान किया कर ।

a. महा भइआन उदिआन नगर कर मानिआ । झूठ समग्री पेख सच कर जानिआ । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 708)

अर्थः- अत्यन्त भयावह जंगल को जीवों ने शहर स्वीकार कर लिया है । इन नश्वर पदार्थों को देखकर हमेशा स्थिर रहनेवाले मान लिया है, (इसलिए) अहंकार वश पागल हुए वे काम, क्रोध एवं लोभ के वशीभूत होकर फिरते हैं ।

b. आवत कउ जाता कहै - जाते कउ आइआ । पर की कउ अपुनी कहै - अपुनो नही भाइआ ।

अर्थः- परमात्मा-मार्ग पर आने वाले को जगत कहता है कि यह बेकार है, परन्तु प्रभु की ओर से गये-गुज़रे अर्थात् उदासीन को जगत समझता है कि इसका जगत में आना सफल है । जिस माया को पराई बन जाना है, उसे जगत अपनी कहता है, परन्तु जो नाम-धन वास्तव में अपना है, वह अच्छा नहीं लगता ।

मीठे कउ कउड़ा कहै – कड़ूए कउ मीठा । राते की निंदा करह – ऐसा कल मह डीठा ।

अर्थः- नाम-रस दूसरे रसों से मीठा है, इसे जगत कड़वा समझता है । विषयों का रस कड़वा है, इसे जगत स्वादिष्ट कह रहा है । प्रभु-नाम में रँगे हुए व्यक्ति की लोग निंदा करते हैं । जगत में वह आश्चर्यजनक तमाशा देखने में आ रहा है ।

चेरी की सेवा करह – ठाकुर नही दीसै । पोखर नीर विरोलीऐ – माखन नही रीसै । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी – 229)

अर्थः- लोग परमात्मा की दासी (माया) की तो सेवा-खुशामद कर रहे हैं, लेकिन (माया का) मालिक किसी को दिखता ही नहीं । यदि तालाब को मथें, यदि पानी को मथें, उसमें से मक्खन नहीं निकल सकता।

८. बहु परपंच कर पर धन लिआवै । सुत दारा पह आन लुटावै।

अर्थः- हे मन ! कई प्रकार का छल-कपट करके तू पराया माल लाता है और लाकर अपने पुत्रों तथा पत्नी को सौंप देता है ।

मन मेरे भूले कपट न कीजै । अंत निबेरा तेरे जीअ पह लीजै।

अर्थः- हे मेरे भ्रमित मन ! तू धोखा-फ़रेब न किया कर, आखिर में इसका हिसाब तेरी आत्मा से ही लिया जाने वाला है ।

छिन-छिन तन छीजै जरा जनावै । तब तेरी ओक कोई पानीओ न पावै ।

अर्थ:- धीरे-धीरे तेरा शरीर कमज़ोर होता जा रहा है, वृद्धावस्था के चिह्न नज़र आ रहे हैं, (वृद्ध होने पर) किसी ने तेरी ओक (हथेलियों को जोड़कर बर्तन की शक्ल में करके जिससे पानी पिया जा सके, अंजलि) में पानी भी नहीं डाला ।

कहत कबीर कोई नही तेरा । हिरदै राम की न जपह सवेरा ।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 656)

अर्थ:- कबीर का कथन है कि हे आत्मा ! (उस समय) कोई भी तेरा साथी नहीं बनेगा (एक प्रभु ही वास्तविक साथी है) । अतः समय रहते तू उस प्रभु को अपने हृदय में क्यों स्मरण नहीं करती ?

d. मन रे कहा भइओ तै बउरा । अहिनिस अउध घटै नही जानै - भइओ लोभ संग हउरा ।

अर्थ:- हे (मेरे) मन ! तू कहाँ (लोभ आदि में फँसकर) पागल हो रहा है ? दिन-रात अवस्था घटती रहती है परन्तु आदमी यह बात समझता नहीं और लोभ में फँसकर निर्बल आत्मिक जीवन वाला बनता जाता है ।

जो तन तै अपनो कर मानिओ - अर सुंदर ग्रिह नारी । इन मैं कछ तेरो रे नाहन - देखो सोच बिचारी ।

अर्थ:- हे मन ! जो शरीर तू अपना समझ रहा है और घर की सुन्दर स्त्री को अपनी मान रहा है, इनमें से कोई भी तेरा साथी नहीं है, सोचकर देख ले, विचार कर देख ले ।

रतन जनम अपनो तै हारिओ – गोबिंद गत नही जानी । निमख न लीन भइओ चरनन सिंउ – बिरथा अउध सिरानी । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी – 220)

अर्थः- हे (मेरे) मन ! जैसे जुआरी जुए में बाजी हारता है, वैसे ही तू अपना कीमती मनुष्य-जन्म हार रहा है; क्योंकि तूने परमात्मा के साथ मिलाप का महत्व नहीं समझा । तू थोड़ी सी देर के लिए भी गोबिंद प्रभु के चरणों में नहीं जुड़ता, तू व्यर्थ अवस्था समाप्त कर रहा है ।

e. रैण गवाई सोइ कै – दिवस गवाइआ खाइ । हीरे जैसा जनम है – कउडी बदले जाइ । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी – 156)

अर्थः- (हे मूख !) तू रात्रि सोकर गुज़ारता जा रहा है और दिन खा-खाकर व्यर्थ बिताता जाता है, तेरा यह मनुष्य-जन्म हीरे जैसा कीमती है, पर (स्मरण के बिना) कौड़ी के भाव जा रहा है ।

f. फरीदा चार गवाइआ हंढ कै – चार गवाइआ सम । लेखा रब मगेसीआ – तू आंहो केर्हे कम । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी – 1379)

अर्थः- फ़रीद कहते हैं कि ऐ मनुष्य, तुमने चार पहर (दिन) तो घूम-फिरकर आनन्द में बिता दिए, शेष चार पहर (रात्रि) सोकर खो दिए । मृत्युपरांत परमात्मा तुमसे हिसाब माँगेगा कि तुम्हें क्या काम सौंपा गया था और तुम क्या कार्य करते रहे !

g. सिर कमपिओ पग डगमगे – नैन जोत ते हीन । कह नानक इह बिध भई – तऊ न हरि रस लीन । (1429)

अर्थ:- (वृद्धावस्था में) मनुष्य का सिर काँपने लगता है, पाँव डगमगाते हैं, नयनों में ज्योति नहीं रह जाती । गुरु नानक कहते हैं कि यह अवस्था आ गई, तो भी (मनुष्य ने) हरि-रस का पान नहीं किया । (अर्थात् बुढ़ापा आ गया, किन्तु मनुष्य फिर भी भजन नहीं करता।) ।

h. जरा जीवन जोबन गइआ - किछ कीआ न नीका । इहु जीअरा निरमोलको - कउडी लग मीका । (856)

अर्थ:- योवन का जीवन बीत गया, बुढ़ापा आ गया किन्तु मैं कुछ भी भला कर्म नहीं कर सका ।मेरा यह जीवन, जो अनमोल था, कौड़ियों के बदले बिक गया ।

i. बारह बरस बालपन बीते - बीस बरस कछ तप न कीओ । तीस बरस कछ देव न पूजा - फिर पछुताना बिरध भइओ । मेरी मेरी करते जनम गइओ । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 479)

अर्थ:- (मनुष्य-जीवन में) बारह वर्ष तक बचपन में रहता है, बीस वर्ष (यौवन में) कोई तप नहीं करता । तीस वर्ष तक पहुँचकर भी कोई देव-पूजा नहीं की और अन्ततः वृद्धावस्था आ जाती है । सारा जीवन 'मैं-मेरी' में बीत जाता है और अन्ततः (सत्ता का) सरोवर सूखने पर भुज बल भी नष्ट हो जाता है ।

j. कबीर सूता किआ करह - बैठा रह अर जाग । जा के संग ते बीछुरा - ता ही के संग लाग ।

अर्थः- कबीर जी कहते हैं कि ऐ जीव, सोकर क्यों समय नष्ट करते हो, उठो और जागकर बैठो। जिसके साथ से बिछुड़ गए हो (प्रभु की शरण से भटके हो), पुनः उसी का दामन थाम लो।

कबीर सूता किआ करह – जाग रोइ भै दुख । जा का बासा गोर मह – सो किउ सोवै सुख ।

अर्थः- कबीर जी कहते हैं कि ऐ जीव, तू क्यों ग़ाफ़िल है, यमदूतों के भय से होनेवाले दुःख से सावधान हो जाओ, अन्ततः तुम्हारा वास क़ब्र में होनेवाला है (मृत्यु होनेवाली है), तुम सुख से क्योंकर सो सकते हो ? (अभिप्राय यह कि नश्वर संसार में सबको परमात्मा का नाम सिमरन करना चाहिए।

कबीर सूता किआ करह – उठ कि न जपह मुरार । इक दिन सोवन होइगो – लाबे गोड पसार । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 1371)

अर्थः- कबीर जी जीवों को सावधान करते हुए कहते हैं कि तुम क्यों गफलत की नींद सोते हो ? क्यों नहीं जगकर प्रभु का नाम जपते ? आखिर तो एक दिन ऐसा आने वाला ही है, जब तुम्हें घुटने पसार कर सो जाना है (अर्थात् स्थायी निद्रा= मृत्यु में लीन होना है)।

k. जाग लेहु रे मना जाग लेहु – कहा गाफल सोइआ । जो तन उपजिआ संग ही – सो भी संग न होइआ । (726)

अर्थः- हे मन ! चेतना में आ ! तू क्यों लापरवाह होकर सो रहा है ? जो शरीर जीव के साथ ही पैदा होता है, वह भी आख़िरकार साथ नहीं जाता।

l. बीत जैहै बीत जैहै – जनम अकाज रे । निस दिन सुन के पुरान – समझत नह रे अजान । काल तउ पहूचिओ आन – कहा जैहै भाज रे ।

अर्थः- ऐ मनुष्य, तुम्हारा मानव-जन्म व्यर्थ (निरर्थक) बीत जायेगा । रात-दिन धर्म-ग्रंथों की कथाएँ सुनकर भी ऐ मूर्ख, तुम नहीं समझ सके । मौत तो अब आ पहुँची है, उससे बचकर कहाँ भाग जाओगे ?

असथिर जो मानिओ देह – सो तउ तेरउ होइ है खेह । किउ न हरि को नाम लेह – मूरख निलाज रे । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी – 1352)

अर्थः- जिस काया को तुम स्थायी मानते हो, वह तुम्हारा शरीर तो मिट्टी हो जायेगा। ऐसे में ऐ मूर्ख, निर्लज्ज, क्यों प्रभु का नाम नहीं लेते?

m. कई जनम भए कीट पतंगा । कई जनम गज मीन कुरंगा।

अर्थः- (हे भाई !) तू कितने ही जन्मो में कीड़े, पतगे बनता रहा, कितने ही जन्मो में हाथी, मछली, हिरन बनता रहा ।

n. दिन ते पहर पहर ते घरीआं – आव घटै तन छीजै । काल अहेरी फिरै बधिक जिउ – कहहु कवन बिध कीजै ।

अर्थः- दिन से प्रहर और प्रहर से घड़ियाँ बीतती हैं-इस प्रकार उम्र घटती जाती है और शरीर क्षीण होता जाता है । काल रूपी शिकारी (हिरन आदि का शिकार करने वालों की तरह) फिरता है, हे भाई ! कहो, अब कौन उपाय किया जाये ?

सो दिन आवन लागा । मात पिता भाई सुत बनिता – कहहु कोऊ है का का ।

अर्थः- (अन्त में) एक दिन आ जाता है, जब माँ, बाप, भाई, पुत्र, पत्नी-इनमें से कोई भी उसकी सहायता नहीं कर सकता ।

जब लग जोत काइआ मह बरतै – आपा पसू न बूझै । लालच करै जीवन पद कारन – लोचन कछू न सूझै । (692)

अर्थः- जब तब शरीर में आत्मा अवस्थित है, पशु रूपी मनुष्य अपने मूल को नहीं समझता, अधिकाधिक जीने की चाह करता है, लेकिन इसे आँखों से नहीं सूझता कि काल से मुक्ति पाना असम्भव है ।

०. रैन गई मत दिन भी जाइ । भवर गए बग बैठे आइ । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी – 792)

अर्थः- यही सोचते रात बीत जाती है, कहीं दिन भी इसी प्रकार बीत न जाये (जवानी बोलती है, कही बुढ़ापा भी यों ही न जाये)। भँवरे उड़ गये हैं, बगुले आ बैठे हैं (जवानी बीत गयी है, अब बुढ़ापा आ गया है।) ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

Main Teachings and Important Points –

• The World Is Temporary and Illusory –

The hymns repeatedly remind us that this world is like a dream and can disappear in a moment. Human beings become trapped

in greed, attachment, pride, and material pleasures, forgetting that worldly possessions are temporary.

- ❖ People mistake false and perishable things for eternal truth.
- ❖ Wealth, beauty, relationships, and status do not last forever.
- ❖ The body itself eventually weakens, ages, and turns to dust.

The teachings urge people to awaken spiritually before it is too late.

• God Alone Is the True Companion

The verses explain that while family, friends, wealth, and possessions may seem important, none of them can accompany a person at death. Only God remains the eternal support.

- ❖ God is always present within every being.
- ❖ Constant remembrance of God brings true peace.
- ❖ In the final moments of life, only devotion to God becomes meaningful.

Guru sahib teaches that one should sing the praises of the Divine because only the Divine helps at the end.

• Human Life Is Precious

Human birth is described as priceless—more valuable than a diamond. Yet most people waste it in sleeping, eating, greed, ego, and worldly pursuits. The hymns warn that:

- ❖ Childhood passes in ignorance,
- ❖ Youth passes in pleasures and distractions,
- ❖ Old age arrives with regret and weakness.

Many realize the truth only when life is nearly over.

• Attachment and Greed Lead to Spiritual Blindness

The verses criticize dishonesty, selfishness, and attachment to wealth. People:

❖ Earn wealth through deceit,
❖ Become obsessed with "mine" and "my family,"
❖ Ignore spiritual wisdom,
❖ Chase temporary pleasures instead of eternal truth.

Guru sahib warns that deceitful actions will eventually be judged, and no worldly companion will stand beside the soul in the end.

• Society Often Rejects Spiritual Truth

Another important theme is that society often misunderstands spirituality. People consider worldly pleasures "sweet" and devotion "bitter." Those devoted to God are mocked or criticized. Humanity serves Maya (illusion) but ignores the Master behind it. This inversion of values is presented as a tragic condition of the age.

• Time and Death Are Constantly Approaching

The hymns strongly emphasize the passing of time and certainty of death.

❖ Every moment reduces human lifespan.
❖ Old age gradually weakens the body.
❖ Death can arrive at any time.
❖ No one can escape mortality.

The repeated call is: "Wake up now." Do not remain spiritually asleep. Guru sahib especially stresses that one day everyone must lie down permanently in death, so one should remember God while there is still time.

• Self-Realization and Spiritual Awakening

The teachings encourage introspection:

- ❖ Understand your true identity beyond the body.
- ❖ Recognize the soul's connection with God.
- ❖ Break free from illusion and ego.
- ❖ Live consciously and spiritually.

Human life is seen as a rare opportunity to reunite with the Divine after wandering through countless life forms.

In the end, the main central message of these verses is that worldly life is temporary, uncertain, and ultimately unsatisfying when lived only for material gain. Human beings become trapped in greed, ego, attachment, and distractions, forgetting the true purpose of life. Wealth, relationships, beauty, and even the body itself cannot accompany the soul after death. The hymns urge every person to awaken spiritually, remember God constantly, live honestly, and use this precious human life wisely. True peace and liberation come not from worldly success, but from devotion to God, self-realization, humility, and righteous living. The teachings serve as a compassionate warning: life is passing quickly, so one should turn toward the Divine before time runs out.

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि – "रागमई प्रकाशित सुगंधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं – गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"

ऐक शब्द

साध संगत जी, यदि कुछ भी जरा सा भी कम रह गया अथवा बड़ गया है तो हम दोनों हाथ जोड़कर नतमतसक आपसे क्षमा प्रार्थी हैं । अतः कृपया क्षमा प्रदान करें और बख्शने की भी कृपालता करें – धन्यवाद ।

सृष्टि में सदा ही कोई एक विरला – दुर्लभ – मर्यादित – महाजीव विशेष विद्यमान होता ही है, अतः हम उस महा प्राणी को दोनों हाथ जोड़ नतमतसक सदा ही नमस्कार करते हैं ।

" No help is coming dear ! – so, you better start "
NOW – Help Yourself ?

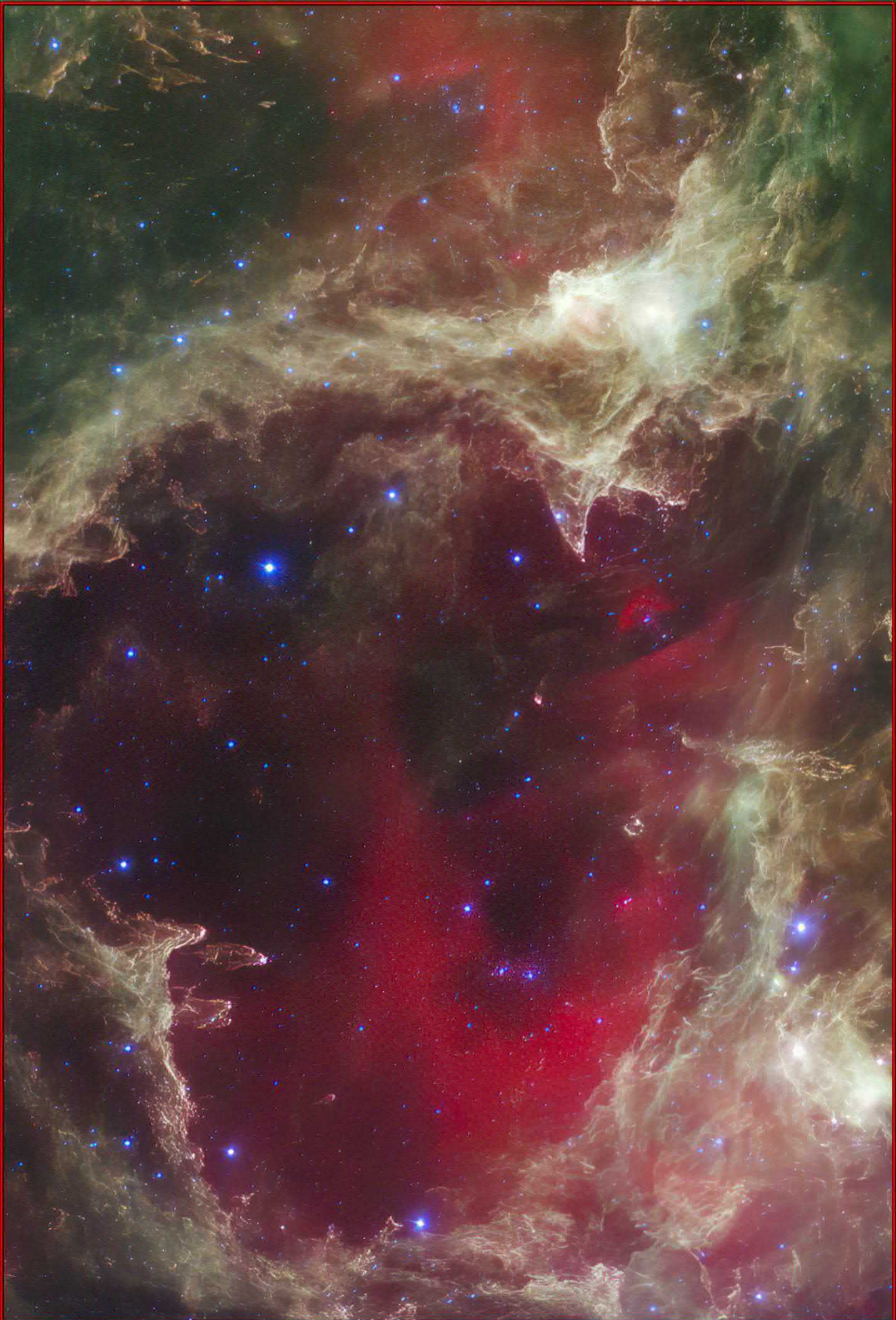

धुर द पैगाम
एक ओंकार सतिगुरू प्रसादि
गुरबाणी कीर्तन
हक
कृपया अमल कर व्यवहारिक बने ।
ताकी स्मर्थ हो कर आगे बढ़ सके ॥
तपः तपै
नमो नमः
मेरे साहिब जी
सतसंग
कहा भूलिओ रे झूठे लोभ लाग । कछु बिगरिओ नाहिन अजहु जाग ।
स्मम सुपने के इह जग जान । बिनसे छिन मै साची मान । संग तेरै हरि बसत नीत ।
निस बासुर भज ताह मीत । बार अंत की होइ सहाइ । कह नानक गुन ता के गाइ ।
www.9009.co.in